

नये साल 2026 की तैयारी और संकल्प

नया साल केवल कैलेंडर का पन्ना नहीं बदलता, बल्कि यह अपने जीवन में नया दृष्टिकोण और नयी स्थिति बनाने की प्रेरणा देता है।



राजयोगिनी द.कु. मंगेशकर

परमपिता परमात्मा चाहते हैं कि हम इस वर्ष को केवल सांसारिक उत्सव तक सीमित न रखें, बल्कि इसे आध्यात्मिक परिवर्तन और नये युग की तैयारी का वर्ष मनाएं।

आत्मिक स्मृति में जीना

सबसे पहले हमें ये संकल्प लेना है कि इस वर्ष हर परिस्थिति में आत्मिक स्मृति को नहीं भूलना है। मैं आत्मा हूँ, परमात्मा की संतान हूँ- यही पहचान हमारे जीवन की असली ताकत है। जब हम आत्मा की स्थिति में रहते हैं तो किसी भी स्थिति का दबाव हमें विचलित नहीं करता।

बाबा से अटूट सम्बन्ध

नये साल की सबसे बड़ी तैयारी है- बाबा से अटूट और गहरा सम्बन्ध बनाना। केवल समय निकालकर योग नहीं, बल्कि हर क्षण योग का अभ्यास करना है। बाबा चाहते हैं कि बच्चे चलते-फिरते, काम करते, सम्बन्ध निभाते हुए भी 'मेरा मन बाबा में' की स्थिति बनाए रखें। ये स्थिति हमें शक्तिशाली बनाएगी।

संकल्पों की शुद्धता

नया साल अपने संकल्पों की जाँच और शुद्धि का समय है। सोचें- मेरे विचार, मेरे बोल और मेरे कर्म क्या बाबा की अपेक्षा अनुसार हैं? यदि कोई कमजोरी है तो उसे बदलने का पक्का और दृढ़ संकल्प करें। बाबा हमसे चाहते हैं कि हर संकल्प शुभ और कल्याणकारी हो, जिससे वातावरण भी शुद्ध हो।

सेवा में नवीनता

नये साल की तैयारी का अर्थ है- सेवा में नवीनता लाना। बाबा चाहते हैं कि हम हर आत्मा तक शान्ति और प्रेम का संदेश पहुंचाएं। इसके लिए हमें नये-नये माध्यम अपनाने होंगे- डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया, व्यक्तिगत संपर्क और छोटे-छोटे प्रोग्राम तथा कॉन्फ्रेंसेज, डायलॉग आदि। सेवा से आत्मा संतुष्ट और तृप्त रहती है।

स्थिति की मजबूती

2026 में हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए- अपनी स्थिति को इतना मजबूत बनाएं कि कोई भी परिस्थिति हमें हिला न सके। चाहे बाहर कितनी भी अशान्ति हो, दुःख हो, भय वाला वातावरण हो लेकिन भीतर का मन हर पल शान्ति में स्थिर रहे। कैसा भी वातावरण का प्रभाव हो पर हमारे मन को विचलित न करे। यही स्थिति बाबा की सच्ची संतान की पहचान है।

प्यारे भाइयों और बहनों, नया साल अपने आप को बदलने और परमपिता शिव परमात्मा के करीब आकर उनसे अपना सम्बन्ध जोड़ने का सुनहरा अवसर है। बाबा हमसे चाहते हैं कि हम उनकी मददगार आत्माएं बनें- शान्ति के दूत और सुख के दाता। तो आइये, इस वर्ष का संकल्प लें कि- "मैं अपनी स्थिति को इतनी ऊंचा बनाऊंगा कि मेरा हर विचार, बोल व कर्म परमपिता शिव परमपिता को प्रत्यक्ष करने और उनसे सभी आत्माओं की मुराद पूरी करने वाला हो।"

हम अगर रोज अमृतवेले बाबा से मिलकर, बाबा से शक्ति लेके, बाबा से किरणें लेकर और लक्ष्य रखें कि मैं आत्मा तो हूँ लेकिन कौन-सी आत्मा हूँ! विश्व-परिवर्तक आत्मा हूँ, बाबा के दिलतख्तरशीन हूँ, विश्व कल्याणकारी हूँ... डायरेक्ट बाबा ने हमको अपना बनाया है, बाबा ने हमको चुना है। अगर ऐसे नये-नये स्वमान हम रोज स्मृति में रखें और सारा दिन ऐसे व्यतीत करें, तो एक तो वैराग्य हो जाएगा और दूसरा नशा चढ़ा रहेगा। निश्चय तो है पर नशा भी हो। इससे पुरुषार्थ में रमणीकता आ जाएगी और खुशी भी रहेगी। तो आत्म-अभिमान होकर रहने से मज्जा आता है। जैसे सीट पर बैठने से खुमारी होती है भले डॉक्टर है लेकिन जब डॉक्टर काम में है उस समय का नशा और जब घर पर रहता है, रिवाज हो जाता है तो फर्क तो हो जाता है ना! तो सीट पर सेट रहो जिससे हमको आत्म-अभिमान बनकर रहना या चलना बहुत सहज हो जाता है। इससे ही जो हमारे व्यर्थ संकल्प हैं वो खत्म हो जाते हैं क्योंकि हमने मन को बिजी रख दिया। मन अगर स्वमान में बिजी रहा तो व्यर्थ संकल्प भी हमारे कट हो सकते हैं क्योंकि व्यर्थ संकल्पों की आदत है, तो जब भी हम एकान्त में बैठेंगे, योग में बैठेंगे या कुछ शुभ सोचने के लिए बैठेंगे, तो व्यर्थ संकल्प जरूर उसमें विघ्न डालेंगे। व्यर्थ संकल्पों के कारण ही हमारा समय भी व्यर्थ जाता है। अच्छा बात सुनी, बातें तो बाबा ने कहा आयेगी ही। जब हमारी स्थिति कभी-कभी ढीली हो जाती है तो व्यर्थ संकल्पों को चान्स मिल जाता है। और मैजारिटी या तो व्यर्थ संकल्पों का पेपर आता है या



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

मन अगर स्वमान में बिजी रहे तो व्यर्थ संकल्प कट हो जाते

स्वभाव-संस्कार का पेपर आता है। लेकिन अगर हमारा मन स्वमान में स्थित है तो हम दूसरों को भी उसी स्वमान में देखेंगे। यादगार में देखो यह जो माला बनाई हुई है उसमें मणके सब समान होते भी नम्बरवार हैं। कहाँ एक नम्बर, कहाँ 108 वां नम्बर कितना अन्तर होगा। तो जब हमको पता है कि नम्बरवार होने ही हैं तो संस्कार भिन्न होंगे ही। जैसे मम्मा की विशेषता थी, जब किसकी रिपोर्ट मम्मा के पास जाती थी तो मम्मा उसको बुलाती जरूर थी, मम्मा की हैण्डलिंग पॉवर ऐसी अच्छी थी, जो हमको भी सीखना चाहिए। मम्मा कहती थी देखो हरेक में कमियां तो हैं, जिसकी कमी हमको

दिखाई देती है उसकी चाल-चलन का प्रभाव पड़ता है। कमियां हैं लेकिन लास्ट बाबा का बच्चा भी बाबा को प्रिय है, क्यों उसमें विशेषता क्या है? भले धारणा नहीं है, उसमें विशेषता ये है जो बड़े-बड़े विद्वान, आचार्य साधारण तन में आये हुए बाप को नहीं पहचान सके लेकिन इस बच्चे ने बाप को पहचान कर मेरा बाबा तो कहा। विशेषता हुई ना! तो मम्मा पहले उनकी विशेषता का वर्णन करती थी, बच्ची आप में यह-यह विशेषता है, तो उन विशेषताओं के आगे ये छोटी-सी बात क्या है! तुम ऐसी हो, तुम ऐसी हो, ये नशा चढ़ा देती थी। तो मम्मा के आगे जाने से कोई डरता नहीं था। जैसे बाबा

श्रेष्ठ संकल्प हों तो समय, श्वास, संकल्प तीनों सफल हों...



राजयोगिनी दादी जानकी जी

मुरली सुनते या सुनाते हरेक को अन्दर चलता होगा कि आज मुरली से मुझे क्या मिला! बाबा कहते जैसे गऊ खाना खाती है फिर सारा दिन चबाती रहती है, तो उसका दूध बनता है। मनुष्य केवल खाते समय चबाते हैं, बाकी सारा दिन क्या करते हैं! हमें जो इतना भारी खजाना मिलता है, खाना भी मिलता है तो खजाना भी मिलता है। इस खजाने से कमाई कितनी है, खुशी कितनी है।

पढ़ाई अच्छी पढ़ने वाले का ध्यान रहता है प्रालम्ब के लिए। लौकिक दुनिया में जो पढ़ते हैं, वो समझते हैं पढ़ना ही है, नहीं तो जियेंगे कैसे! दुनिया को दिखाने के लिए पढ़ते हैं। हम भविष्य दुनिया की प्रालम्ब के लिए पढ़ते हैं। पढ़ाई ऐसी है जो इसमें पुस्तक उठाने की भी जरूरत नहीं है। मुरली एक बारी पढ़ो या 10 बारी पढ़ो, पर मनमनाभव के मंत्र को समझ लो। गीता में भी भगवान समझा-समझा के कहता है मनमनाभव। ज्ञान, भक्ति, वैराग्य। ज्ञान जो संगम पर मिला वो सतयुग-त्रेता में काम आता है। वहाँ कोई ज्ञान लेना-देना नहीं है, पर काम आता है। अभी भगवान के दिए हुए ज्ञान में ताकत है, न पास्ट याद आए, न प्रेजेन्ट में बिना काम वाली बात याद आए। अगर पास्ट इज पास्ट नहीं कर सकते तो याद नहीं रह सकती। पास्ट इज पास्ट करते हैं तो पास हो जाते हैं। बाबा ने कहा हियर नो इविल, भक्ति मार्ग की भी बातें नहीं सुनो। हमारी जीवन जब परिवर्तन होती है, शूद्र से ब्राह्मण बनते हैं। ब्राह्मण कैसे बन गए! सिर्फ बाबा को देखा, ज्ञान सुना, परिवार को देखा, बस ऐसे ब्राह्मण बन गए। किसी ने जबर्दस्ती नहीं किया। ब्राह्मण जीवन में कितनी अच्छी-अच्छी बातें देख कर मोहित हुए हैं, ज्ञान तो पीछे सुना है। तो अन्दर में याद रखो कि हम ब्राह्मण बने क्यों? जीवन अच्छी है, परिवार साथी है, भगवान साथी है, यह सब देखकर ब्राह्मण बने हैं। इस परिवार की अच्छी-अच्छी बातें याद कर लो तो नष्टोमोहा बन जाएंगे।

हनुमान की लगन कैसी दिखाई हुई है, दिखाते हैं चोट लगी हनुमान को तो दर्द हुआ राम को। यह बाबा की प्रैक्टिकल हिस्ट्री है। एक बार मैं पूना में हॉस्पिटल में थी, मुझे जब भी डॉक्टर हाथ लगाता था तो बाबा को शॉक लगता था, शकल पीली होती जाती थी। किसी ने पूछा तो कहा जनक का दर्द पी रहा हूँ, मैं आराम से थी। वण्डर है इतना उसका प्यार है। जो थोड़ा भी बाबा को प्यार करते हैं बाबा उन्हें कितना प्यार करता है। उसका शुक्रिया मानो तो कितना प्यार करेगा। कितना हमको शान्ति और खुशी का जो भरके खजाना दिया है। जहाँ भी कदम है वहाँ सेवा है, मैं कभी नहीं कहूँगी हॉस्पिटल में हूँ। डॉक्टर को कभी ऐसा पेशेंट तो देखने को मिले, नर्सों को ऐसे पेशेंट तो मिलें जो कभी कम्प्लेन न करें। क्या बड़ी बात है! बाबा कहता है पुराने कपड़े को सम्भाल के रखना है। साफ भी रखना है, इतना अक्ल सिखा रहा है। अक्लमंद वो है जो नकल करना जानता है। बाबा को कॉपी करके अर्थात् उसकी नकल करके दिखाए। तभी अंगद जैसी अडोल अवस्था बनेगी।

बाबा की याद इतना मीठा बनाती है, किसकी याद में बैठे हैं? मेडिटेशन है क्या! न माला है, न मंत्र है। एक अक्ल है नकल करने का, दूसरा जो इलम पढ़ा है उसे अमल में लाना है। मेडिटेशन क्या है, अपने संकल्प को शुद्ध शान्त रखना। जो कहते हैं पुरुषार्थ के लिए टाइम नहीं है, वह अपने को ठगते हैं। पुरुषार्थ है क्या! अन्दर से मन को व्यर्थ से फ्री करना। अन्दर व्यर्थ में जो टाइम गंवा रहे हैं उसमें कितना नुकसान है, फिर कहते हैं टाइम नहीं है। व्यर्थ में टाइम नष्ट हो रहा है। श्रेष्ठ संकल्प हो तो समय, श्वास, संकल्प तीनों सफल हों। पुरुषार्थ में भविष्य अच्छा नजर आता है, पास्ट खत्म हो जाता है। शक्ति आ जाती है। पास्ट का कोई भी स्वभाव-संस्कार है तो वो शक्ति छीन लेता है। हिम्मत है तो बाबा की मदद है।

बाबा का हम बच्चों से दिल का प्रेम है, इसलिए दिल में आता बाबा की हम सर्विस करें। दिन-रात अथक होकर सेवा करते, तन-मन-धन लगाते। अन्दर से रहम आता जो राह भटक रहे हैं, उनको राह बताएं। सभी को बाबा का यह सन्देश दें कि आओ हम सब मिलकर बेटर वर्ल्ड बनाएं। तो अपनी वर्ल्ड समझकर सर्विस करते।

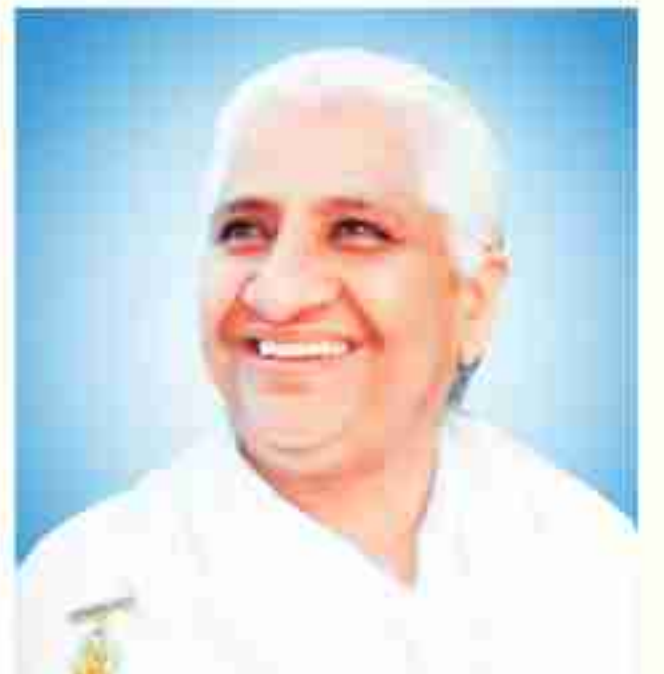
बाबा ने हम बच्चों को सर्विस का भी बहुत अच्छा खिलौना दिया है। कोई को सर्विस के बिगर चैन नहीं पड़ता। लेकिन सर्विस में कभी-कभी नाउम्मीदी भी हो जाती है। बहुत मेहनत करने पर भी रैस्पॉन्ड नहीं मिलता तो सोचते पता नहीं क्या हमारी कमी है। यह नहीं सोचते हैं कि कितना हमने बीज डाला है, वह बीज कभी जा नहीं सकता इसलिए सर्विस में कभी नाउम्मीद नहीं बनो।

समर्पित जीवन की कुछ निशानियां

1). जिसने अपनी जीवन बाबा को समर्पित कर दी उसे सूक्ष्म में भी यह संकल्प नहीं आ सकता कि पता नहीं अन्त तक चल सकूंगी या नहीं। अगर सूक्ष्म में

सफेद कपड़ा, जेब खाली... वह है विश्व के मालिक।

4). समर्पित माना हर संकल्प श्रेष्ठ, शुद्ध पावन हो तब हमारी भावनाओं का असर दूसरों पर पड़ेगा। हम एक-एक ऊंचा बनें तो कितना मजबूत होगा। पवित्र संस्कार रखने से वायब्रेशन फैलते हैं। अगर एक को भी तूफान आता है तो वह सोचे कि हमारे वायब्रेशन सारे किले में फैल रहे हैं। अगर इतनी जवाबदारी समझें तो तूफान खत्म हो जाएगा। हमारा एक पाँवरफुल शुद्ध संकल्प पूरे किले को मजबूत बनाएगा।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जितना मैं त्याग वृत्ति में रहती उतना मेरे से सब सीखते

भी यह संकल्प आता तो यह बड़ी माया है। संकल्पों में दृढ़ता है तो कमजोर संकल्प उठ नहीं सकते।

2). समर्पित आत्मा के लिए बुरा बोलना, बुरा देखना तो दूर रहा लेकिन बुरा सोचने को संकल्प भी नहीं आ सकता। उन्हें तो बस एक ही लगन है कि हमें अपनी बैग बैगेज कम्पलीट हिसाब-किताब चुकतु करके बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है।

3). हमारा एक-एक कदम सारे विश्व से सम्बन्धित है। हम यज्ञ के किले की एक-एक ईंट हैं। अगर एक ईंट भी गिरी तो सारी दीवाल हिला देगी। साधनों में वृत्ति गई तो साधना टूट जाएगी। जो बाबा को समर्पित हो गए, उनका जवाबदार बाबा है। वह कभी पैसे के पीछे नहीं भागते, कोई भी प्रकार का बिजनेस आदि भी नहीं कर सकते। उन्हें खिलाने वाला, पहनाने वाला, सुलाने वाला बाबा है, इसलिए वे सब प्रकार के चिंतन और चिंताओं से मुक्त रहते हैं। उनके लिए तो कहा जाता-

5). मेरे ऊपर अगर कोई विशेष खर्चा हो तो यह भी मेरे खाते में जमा होता है। मेरे ऊपर इतना ही खर्च होना चाहिए जितना अनुकूल है। अगर किसी भी आदत के कारण कोई विशेष खर्च होता तो यह भी बोझ बढ़ता। जिसने पाई-पाई जमा करके दान दिया उसका जमा हो गया और मैंने अपने प्रति यूज किया तो मेरे खाते से ना अर्थात् घाटा हो गया।

6). हमें अपने संकल्प उतने ही खर्च करने हैं जिससे सारे वायुमण्डल में साइलेन्स का प्रभाव रहे। ऐसा न हो मेरे संकल्प साइलेन्स के वायब्रेशन को डिस्टर्ब करें, इसका भी कई गुणा हिसाब बनता है। मेरी एक की स्थिति खराब हुई तो उसका असर बहुतों पर पड़ता है। मेरे को देख दूसरे भी सीखते तो उसका वायुमण्डल जो बनता उसके निमित्त भी मैं बनी। जितना मैं त्याग वृत्ति में रहती उतना मेरे को देख सब सीखते हैं तो मेरा उसमें जमा हो जाता। मेरे त्याग ने दूसरों में त्याग पैदा किया तो मेरा संग तारने वाला बना।